MSK 006

स्नातकोत्तर उपाधि संस्कृत कार्यक्रम (एम.एस.के.)

एम.ए. संस्कृत कार्यक्रम (MSK)

सत्रीय कार्य– जुलाई 2023 एवं जनवरी 2024 सत्रों के लिए

स्नातकोत्तर उत्तरार्द्ध

MSK 006 भाषा विज्ञान ,अनुवाद एवं निबन्ध लेखन

(द्वितीय वर्ष)

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली – 110068

स्नातकोत्तर उपाधि संस्कृत कार्यक्रम (एम.एस.के.)

एम.ए संस्कृत कार्यक्रम (MSK)

MSK 006 भाषा विज्ञान ,अनुवाद एवं निबन्ध लेखन

स्नातकोत्तर उत्तरार्द्ध

(द्वितीय वर्ष)

सत्रीय कार्य– जुलाई 2023 एवं जनवरी 2024 सत्रों के लिए

पाठ्यक्रम कोड : MSK-006/2023&24

प्रिय छात्र/छात्राओं,

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (ज्ड।) है। सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएँगे।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें। निर्देश :– सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दायें सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।

2) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे दिखाया गया है :

अनुक्रमांक : ..... नाम : .....

..... पता : .....

.....

पाठ्यक्रम का नाम/कोड : ..... सत्रीय कार्य

कोड : ..... अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड : .....

.....

दिनांक : .....

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1- अध्ययन : सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढगं से व्यवस्थित कीजिए।

2- अभ्यास : उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबंधात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए। यह सुनिश्चित कर लीजिए कि : क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

ख) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

ग) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3- प्रस्तुति : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसे साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं के साथ।

नोट : याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

सत्रीय कार्य जमा कराने की तिथियाँ

जुलाई 2023 सत्र के लिए 31 मार्च 2024

जनवरी 2024 सत्र के लिए : 30 सितंबर 2024

सत्रीय कार्य :

MSK 006 भाषा विज्ञान ,अनुवाद एवं निबन्ध लेखन

पाठ्यक्रम कोड – MSK 006

पाठ्यक्रम शीर्षक– भाषा विज्ञान ,अनुवाद एवं निबन्ध लेखन

प्र. 1.किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए– 5×15

क. ध्वनि विज्ञान की उपयोगीता और शाखाओं पर लेख लिखिए ।

ख .अर्थ परिवर्तन के कारणों पर प्रकाश डालिए ।

ग. लिपियों के विकास पर लेख लिखिए ।

घ. वाक्य विज्ञान पर लेख लिखिए ।

ड. अनुवाद के नियमों को उदाहरण की सहायता से स्पष्ट कीजिए ।

च. ध्वनि परिवर्तन की व्याख्या कीजिए ।

प्र. 2 निम्न में से किसी एक पर संस्कृत में निबन्ध लिखिए – 1×15

परोपकाराय सतां विभूतयः

अथवा

मुखं व्याकरणं स्मृतम्

प्र. 3. निम्न में से किसी एक का हिन्दी में अनुवाद कीजिए 1×10

क. अयमेव अहोरात्रं जनयति, अयमेव वत्सरं द्वादशसु भागेषु विभनक्ति, अयमेव कारणं षण्णामृतूनाम्, एष एवाङ्गीकरोति उत्तरं दक्षिणं चायनम्, एनेनैव सम्पादिता युगभेदाः, एनेनैव कृताः कल्पभेदाः, एनमेवाऽऽश्रित्य भवति परमेष्ठिनः परार्द्धसङ्खया, असावेव चर्कर्तिबर्भर्ति जर्हर्तिं च जगत्, वेदा एतस्यैव वन्दिनःगायत्री अमुमेव गायति, ब्रह्मनिष्ठा ब्राह्मणा अमुमेवाहरहरुपतिष्ठन्ते। धन्य एष कुलमूलं श्रीरामचन्द्रस्य प्रणम्य एष विश्वेषामिति उदेष्यन्तं भास्वन्तं प्रणमन् निजपर्णकुटीरात् निश्चक्राम कश्चित् गुरुसेवनपटुर्विप्रबटुः।

अथवा

ख. तिमिरोद्गतिः शास्त्रदृष्टीनाम्, पुरःपताका सर्वाविनयानाम्, उत्पत्तिनिम्नगा क्रोधावेगग्राहाणाम्, आपानभूमिर्विषयमधूनाम्, संगीतशाला भ्रूविकारनाट्यानाम्, आवासदरी दोषाशीविषाणाम्, उत्सारणवेत्रलता सत्पुरुषव्यवहाराणाम्, अकालप्रावृड् गुणकलहंसकानाम्, विसर्पणभूमिर्लोकापवादविस्फोटकानाम्,प्रस्तावना कपटनाटकस्य, कदलिका कामकरिणः, वध्यशाला साधुभावस्य, राहुजिह्वा धर्मेन्दुमण्डलस्य। न हि तं पश्यामि यो ह्यपरिचितयानया न निर्भ्ज्ञरमुपगूढः, यो वा न विप्रलब्धः।